श्री समयसार गाथा नं.६... उसके भावार्थ का दूसरा पैराग्राफ।

यहाँ यह भी जानना चाहिए... क्या करने को कहा है ? यह कहते हैं, आत्मा है वह ज्ञायकभाव त्रिकाल, उसमें जो यह गुणस्थान का भेद है, यह शुभ-अशुभ पुण्य-पाप का भेद, यह उसमें नहीं, पर्याय में है। वस्तु जो है ज्ञायकरस अस्ति मौजूदगी चीज, वस्तु मौजूदगी चीज आत्मा, ध्रुव, वह सम्यग्दर्शन का विषय। धर्म की पहली सीढ़ी प्राप्त करने में, वह ज्ञायक चैतन्य रस हलचल अर्थात् परिणमन पर्याय बिना की वस्तु, इसमें हलचल नहीं। आहाहा ! सूक्ष्मबात है भाई, पर्याय है तो हलचल करती है, बदलती है, वस्तु जो ध्रुव यह तो हलचल बिना की एकरूप त्रिकाल शुद्ध सत्तास्वरूप, उसमें तो पर्याय का भेद भी नहीं, वह सम्यग्दर्शन का विषय है। आहाहा !

धर्म की पहली सीढ़ी सम्यग्दर्शन, पहली श्रेणी उसका विषय त्रिकाली ज्ञायकभाव जो एकरूप है वह उसका विषय। इस अपेक्षा से अशुद्ध द्रव्यार्थिकिनय कहो पर्याय कहो कि व्यवहार कहो, तीनों उस चीज में नहीं। आहाहा ! पर्याय में है इस अपेक्षा

तो लेना है, वस्तु में चैतन्यज्योति त्रिकाली एक सदृश्य चैतन्यघन चैतन्य के प्रकाश का पूर का नूर - ऐसा तेज का पिण्ड... यह तुम्हारे वहाँ डॉक्टर की पढ़ाई में कहाँ आये - ऐसा नहीं कहीं। आहाहाहा ! अस्ति है न ? अस्ति है न, अस्ति है न ? तब है तो अस्ति उसकी मोजूदगी क्या है, स्थाई मौजूदगी क्या है ? स्थाई उपस्थिति तो ज्ञान, आनंद आदि का रस, ध्रुव, एकरूप त्रिकाल अनादि अंत बिना की चीज, शुरूआत नहीं, अंत नहीं, बीच में भी कायम ध्रुवरूप विराजमान प्रभु... आहाहा ! इस वस्तु को सत्य कहकर पर्याय को असत्य कहा अथवा वह पर्याय भी, रागरूप, ध्रुव परिणमता नहीं, क्योंकि ज्ञायकभाव जो ध्रुव है... और यह पुण्य-पाप तो अचेतनभाव है। आहाहा !

दया, दान व्रत, भक्ति आदि का विकल्प जो है यह तो अचेतन है, अचेतन का अर्थ ? उसमें ज्ञायकरस जो चिदानंद है वह उसमें आता नहीं, और ज्ञायककी किरण जो है वह भी पुण्य-पाप के भाव में आती नहीं, इस कारण पुण्य-पाप को अचेतन और जड़ कहने में आया है। आहाहाहा ! ***यह शरीर जड़ है उसमें तो रंग, गंध, रस, स्पर्श है और पुण्य-पाप का भाव है, दया, दान, व्रत, भक्ति, काम, क्रोध इसमें रंग, गंध नहीं परंतु उसमें चैतन्य के प्रकाश की किरण नहीं, इस अपेक्षा से पुण्य और पाप भाव को जड़ और अचेतन कहने में आया है।*** आहाहा ! समझ में आया ? तब कहते हैं कि अचेतन और जड़ कहकर, उसका निषेध किया कि वस्तु में है नहीं, तब वह पर्याय में है कि नहीं ? पर्याय में न हो तो, निर्णय करनेवाली तो पर्याय है, क्या कहते हैं ? जो त्रिकाली चीज है ध्रुव ज्ञायक ध्रुव वज्र का बिम्ब, वज्र, वज्र जैसा है इसप्रकार ज्ञानानंद बिम्ब ध्रुव हलचल बिना की वह वस्तु है। पर्याय बिना की (है)

परंतु 'यह है' यह निर्णय उसका कौन करती है ? अनित्य-नित्य का निर्णय करती है, यहाँ बात ही दूसरी सारी दुनियाँ से भिन्न है। यह नित्यानंद प्रभु ध्रुव, आदि नहीं, अंत नहीं वस्तु सहज सहजात्मस्वरूप ध्रुव, वह तो मैं यह हूँ, उसका निर्णय उसमें तो है नहीं, निर्णय करनेवाली, तो पर्याय है, जो अनित्य है पलटती है हलचलवाली है, आहाहा ! तब वह पर्याय उसमें नहीं, परंतु पर्याय निर्णय करती है, तो पर्याय-पर्याय में है, लौजिक कठिन बहुत भाई, वीतराग का मार्ग, जिनेश्वर का मार्ग बहुत कठिन है।

जगत को तो अभी सुनने मिलता नहीं, बाहर का यह करो और सेवा करो और अमुक करो एवं यह देश सेवा करो तथा मानव की सेवा करो ! यह कौन करे प्रभु ! पर की सेवा अर्थात क्या ? इसका अर्थ क्या ? परद्रव्य है कि नहीं ?

है तो उसकी पर्याय (है कि नहीं) वर्तमान में पर्याय बिना का द्रव्य है ? उसकी पर्याय का कार्य तो वह द्रव्य करता है। तुम दूसरे का करो (कैसे) ? तुम दूसरों की सेवा करते हो मानते हो यह तो मिथ्याभ्रम अज्ञान है। आहाहा ! यह डॉक्टर गये थे न अभी... जेल में गये थे न... आहाहा ! यहाँ तो प्रभु कहते हैं त्रिलोकनाथ सर्वज्ञ जिनेश्वर देव वीतराग परमात्मा, अनंत तीर्थंकर वर्तमान में बिराजते हैं २० तीर्थंकर महाविदेह क्षेत्र में, प्रभु तो बिराजते हैं... यह वाणी है। कुन्दकुन्दाचार्य वहाँ गये थे, आठ दिन रहे थे। वह वहाँ से आकर भगवान का यह संदेश (लाये) हैं - ऐसा जगत को प्रसिद्ध करते हैं आड़तिया होकर, माल प्रभु का है आहाहा ! समझ में आया ? तब कहते हैं कि भगवान आत्मा चैतन्यज्ञायकरस अस्ति मौजूदगी चीज, वह तो पर्याय बिना की चीज है, उसमें तो अशुद्धता जो द्रव्यनय की अशुद्धता कहने में आती है, अशुद्धद्रव्यार्थिक (नय), द्रव्य अशुद्ध नहीं होता है, परंतु द्रव्य की पर्याय अशुद्ध होती है इस कारण अशुद्धद्रव्यार्थिक कहते हैं और उस अशुद्धद्रव्य के नय के (अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय के) विषयको पर्याय कहते हैं और वह पर्याय तो व्यवहार है और त्रिकाली चीज है वह निश्चय है। आहाहा ! इसमें बात कैसे समझना, इस कारण कहा न, पर्याय का निषेध किया है न भाई ? कि ज्ञायक में पर्याय है ही नहीं, और ज्ञायक है वह शुभाशुभ भावरूप हुआ ही नहीं, क्योंकि ज्ञानरस चैतन्य, चैतन्यप्रकाश का पुञ्ज, वह पुण्य-पाप का भाव जो अचेतन है उसमें अंधकार है, वह प्रकाश का अंश नहीं वह अंधकार है। तो चैतन्यप्रकाश का पूर (प्रवाह) जो चेतनत्व वह अंधकाररूप कभी हुआ नहीं। समझ में आया ? आहाहा !

और जो ज्ञायकभाव, शुभाशुभ भावरूप हो जाय तब ज्ञायकरस अचेतन हो जाये जड़ हो जाये। आहाहाहा ! यह दया-दान-व्रत-भक्ति का भाव भी अचेतन जड़ है क्योंकि इसमें विकल्प है, राग है, उसरूप जो चैतन्य हो जाये, तो चेतन जड़ हो जाये, ज्ञायक चैतन्यप्रकाश में रागरूप अंधेरा हो जाये तब आत्मा अंधेरेरूप हो जाये, अचेतन हो जाये। आहाहाहा ! ऐसी बात है।

अर्थात पर्याय में जो अशुद्धता है यह द्रव्यार्थिकनय का विषय नहीं, वह तो अशुद्ध द्रव्यार्थिकनय का (विषय है) अशुद्धद्रव्यार्थिक अर्थात वह द्रव्य की पर्याय में है उस अपेक्षा से अशुद्धद्रव्यार्थिक कहा, उसीको पर्यायार्थिक कहा और उसको व्यवहार कहा, वह व्यवहार झूठा है - ऐसा कहेंगे। आहाहा ! अब यहाँ कहते हैं, **`यहाँ यह भी जानना चाहिए कि जिनमत का कथन स्याद्वादरूप है`** वीतराग त्रिलोकनाथ के अभिप्राय में स्याद्वादरूप है, स्यात् अर्थात अपेक्षा से कथन करना है। `स्याद्वाद' स्यात् अर्थात अपेक्षा से कथन करना यह जिनमत का कथन है। इसलिये अशुद्धनय से पर्याय

में शुभाशुभ भाव है यह चैतन्य शुभाशुभ रूप नहीं हुआ - ऐसा जो कहा, परंतु अशुद्धनय का विषय नहीं है - ऐसा नहीं। आहाहाहा !

जैसे त्रिकाली ज्ञायकभाव शुद्धस्वभाव ध्रुव यह शुभाशुभरूप हुआ नहीं, परंतु शुभाशुभ भाव पर्याय में है इसका निषेध करे तो, तब वस्तु का निषेध हो जाता है। आहाहा ! समझ में आया ? अशुद्धनय को सर्वथा असत्य न माना जाये, यहाँ तो यह कहा है कि अशुद्ध (नय) है वह झूठा है असत्यार्थ है। किस अपेक्षा से ? वह त्रिकाली चैतन्यज्योति जो ध्रुवधातु है, चैतन्यधातु चैतन्यपना जिसने धारणकर रखा है, उसकी अपेक्षा से राग और पुण्य-पाप को अशुद्ध कहकर, अचेतन कहकर, द्रव्य में नहीं है - ऐसा कहा, परंतु पर्याय में नहीं है... `**सर्वथा उसको असत्यार्थ न माना जाये**' आहाहा ! समझ में आया ?

`**क्योंकि स्याद्वाद प्रमाण से अशुद्धता शुद्धता दोनों वस्तु के धर्म हैं,**' क्या कहा ? ***कथंचित्नय से जो परमार्थ का कथन है प्रभु का, यह शुद्ध जो त्रिकाली है वह भी वस्तु का सत्त्व है, वस्तु का सत्त्व है, कस है, इसीप्रकार पुण्य-पाप की पर्याय में भी वस्तु का कस है, पर्यायरूप तत्त्व है।*** आहाहाहा ! (लोगो का) हर शब्द अज्ञात हैं, उसकी पढ़ाई में नहीं आये, व्यापार में नहीं आये अभी तब संप्रदाय में भी यह नहीं है। आहाहा !

क्या कहा ? स्याद्वादप्रमाण से, अपेक्षा से वस्तु को सिद्ध करने में शुद्धता त्रिकाली और अशुद्धता वर्तमान दोनों वस्तु के धर्म हैं। धर्म अर्थात दोनों वस्तुओं को धारण करनेवाली चीज है। धर्म अर्थात सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र इस धर्म की बात यहाँ नहीं। वस्तु ने धारण किये हुये भाव है, ***जैसे वस्तु भगवान त्रिकाली धारण किये हुई चीज है, वैसे ही पुण्य-पाप भी पर्याय में धारण की हुई चीज है, पुण्य-पाप अस्ति है, पुण्य-पाप नहीं है - ऐसा नहीं।*** आहाहाहा ! समझ में आया ? सूक्ष्मबात है यह सभी। किसी दिन कहीं सुना नहीं, सत्य क्या है, संप्रदाय में भी अभी गोलमाल चलता है सभी। यह करो और वह करो व्रत करो और तप करो। यह करना करना यह तो विकल्प और राग है, ***राग का कर्तृत्व ज्ञानरूप चैतन्य को सोंपना मिथ्यात्व है,*** परंतु वस्तु है अवश्य, अशुद्धता है अवश्य, पर्याय में अशुद्धता न हो... तब पर्याय शुद्ध है तब तो धर्म है ही, तब धर्म करना तो रहता नहीं। हमें धर्म करना है यह प्रश्न उठे तो उसका अर्थ क्या ? कि उसकी पर्याय में धर्म है नहीं, (अर्थात्) पर्याय में अधर्म है, तो अधर्म नाश करके धर्म करना है। तब अधर्म भी पर्याय में है। आहाहा ! यह तो लौजिक से (समझना) प्रभु का मार्ग कैसा है ? अभी अज्ञात हो गया है। आहा ! आहाहा !

दोनों ही वस्तु धर्म है; धर्म का अर्थ ? वस्तु ने उन्हे टिकाए रखा है वस्तु (ने) जो भगवान आत्मा त्रिकाली ध्रुव (को) टिका रखा है उसी प्रकार पर्याय में अशुद्धता भी टिकाए रखी है। आहाहा ! समझ में आया ?

और वस्तु धर्म वस्तु का सत्व है, क्या कहा समझ में आया ? वस्तु जो प्रभु ज्ञायकभाव जो त्रिकाली वह भी वस्तु का धर्म है, वस्तु द्वारा धारण की हुई चीज है, टिकाकर रखी है। उसकी पर्याय में मलिनता है, वह भी वस्तु का सत्व है। असत्व नहीं। पर्याय की मलिनता वह पर्याय का सत्व है सत्व नाम कस है उसका एक अंश है कस है। आहाहाहा ! है ! धर्म वस्तु का सत्व है अर्थात क्या ? शुद्ध जो ज्ञायक त्रिकाली वह भी वस्तु का सत्व है यह त्रिकाली, और पुण्य-पाप, दया, दान, काम, क्रोध का भाव वर्तमान पर्याय में उसके अस्तित्व में उसका सत्व पर्याय के सत्व में, यह अपने में है। आहाहा !

`अंतर मात्र इतना है कि अशुद्धता परद्रव्य के संयोग से होती है' इतना फर्क, शुभ और अशुभ भाव, अशुद्ध, यह वस्तु की पर्याय का सत्व अर्थात उसकी चीज है। पर्याय भी उसकी चीज है, परंतु फर्क इतना है कि अशुद्धता पुण्य-पाप का भाव संयोग के लक्ष्य से संयोग जनित कहने में आते हैं। आहाहाहा ! है ? परंतु अशुद्धता परद्रव्य के संयोग से होती है ? **`अशुद्ध नय को यहाँ हेय कहा है,'** यह पुण्य-पाप के भाव को छोड़ने लायक कहा है, जिसको धर्म प्रगट करना हो, सम्यग्दर्शन धर्म की पहली सीढ़ी, उसको ज्ञायकभाव त्रिकाली वह आदरणीय है, और शुभाशुभ भाव हेय हैं, छोड़ने लायक हैं - ऐसा कहा है। आहाहा ! समझ में आया ?

भाई इसकी एक पंक्ति समक्ष कठिन है। यह तो सिद्धांत है, यह कहीं कथा वार्ता नहीं है, भागवत् कथा है। भागवत कथा कहते हैं ना ? नियमसार में आया है ना अंत में, यह भागवत कथा भगवत स्वरूप भगवान आत्मा, भगवान त्रिलोकनाथ ने कहा, प्रभु तुम्हारा स्वरूप वस्तु तो भगवत् स्वरूप त्रिकाल तो यह है, परन्तु तुम्हारी पर्याय में भूल है, पुण्य-पाप भाव है यह है, शुद्धता त्रिकाल है, पर्याय में अशुद्धता है। ये अशुद्धता द्रव्य ने की है और भले पर्याय ने किया है और पर्याय में मौजूद है। अशुद्धता पर्याय में है, फर्क मात्र त्रिकाली वस्तु स्वतः स्वभाविक वस्तु है, और पुण्य-पाप का भाव संयोगी (भाव) कर्म के लक्ष्य से होता है। आहाहाहा ! है ! **`अशुद्धनय को यहाँ हेय कहा है, क्योंकि अशुद्धनय का विषय संसार है'** यह पुण्य-पाप का भाव संसार है, दुःख है।

यह दुकान धंधा में सारे दिन रहना `अकेला पाप भाव है' (श्रोता :- पेट किस प्रकार भरें यदि धंधा न करें तो) है ? कौन पेट भरता है ? पेट तो जड़ है, जड़

मे जड़ आना हो तो (वह) चीज आयेगी ही - ऐसा नहीं कहते - अपनी गुजराती में ? दाने दाने पर लिखा खानेवाले का नाम ! दाने दाने पर नाम है, नेमचन्द्र भाई कहा जाता है तुम्हारे (यहाँ) ? खानेवाले का दाने दाने पर मुहर छाप है। मुहर छाप का अर्थ ? वहाँ कहाँ (नाम) है, परंतु जो परमाणु आनेवाला है (वह) आयेगा ही, और नहीं आनेवाला है तो नहीं आयेगा, तुम लाख पुरुषार्थ करो तब भी नहीं आयेगा और आनेवाले को रोकने से नहीं रोक सकते, उसके कारण से आता है और उसके कारण से जाता है अहार के परमाणु तुम्हारे कारण से आते हैं - ऐसा है नहीं।

(श्रोता :- परमाणु नहीं आये परंतु रुपया आये न ?) धूल में रुपया नहीं आता, रूपया यह जड़ परमाणुओं का (पिण्ड) है। वह भी परमाणु जहाँ जानेवाले है वहाँ जायेंगे, जहाँ रहनेवाला है वहाँ रहेगें। तुम से रहेंगें और तुम पर को दे सकते हो यह बात तीन काल में सच्ची नहीं। बात-बात में बहुत फर्क बापू !

अरे चौरासी के अवतार भाई, इसने भटकते हुए किये है। आहाहा ! प्रभु तो - ऐसा कहते हैं कि तुमने इतना दुःख सहन किया कि उस दुःख को देखनेवाले को रुदन आया। तुमने तो सहन किया परंतु देखनेवाले को (रोना आया), तुमने इतना दुःख सहन किया है। चौराशी के अवतार... नर्क में, कीड़ा, कौआ, कुत्ता, कबूतर आहाहा ! कौआ, इल्ली-इल्ली होती है दो-दो हाथ लम्बी पतली जाती हो उसी समय पांचमन का ऊपर पत्थरगिरे एक वेत दब जाये और एक वेत बाहर रहे, करना क्या अब ? आहा ! वह वहाँ की वहाँ मर जानेवाली है, देह छूट जायेगी, कारण कि अंदर से निकल सके नहीं, खींचने जायें तो आधी टूट जाय। इल्ली होती है न इतनी लम्बी, सूत के धागे जैसी लम्बी। इल्ली समझते हैं इल्ली जीव। आहाहा !

अरे हमने तो एक ऊंट को देखा था, ऊंट को जंगल में। ऐसे अच्छा जवान ऊंट, राणपुर से नागेस जाते थे दो गाँव, रास्ते में पड़ा था ऊँट, हमने पूंछा यह क्यों (पड़ा है) (कहा) कि इसका पैर टूट गया है, ऊंट का पैर इसप्रकार आड़ा होता है थोड़ा - ऐसा, अपना जैसा सीधा होता वैसा नहीं, उसमें भी यदि गिर जाय, चल सके नहीं, चल सके नहीं तो, मरना ही पड़ेगा। देह छूट जाती है, हमने पूछाँ यह यहाँ क्यों ? इसका पैर फिसल गया है, अब खतम हो गया। यहाँ से चल सके नहीं उसको थोड़ा अनाज डाला था, वह घास खाये और वही के वही देह छूट जायेगी। आहाहाहा ! ऐसे प्रभु अनंतभव किये हैं तुमने, अनंतकाल के हो न तुम, अनादि के हो कि नये हो ? आहाहा !

यह परिभ्रमणन का दुःख नाश करना, है तो प्रभु तेरी चीज एक अंदर आनंद

का नाथ है, तुम्हारा शरण वहाँ है, तुम्हारा रक्षक वहाँ है, तुम्हारी उत्तम चीज अंदर ज्ञायक है। आहाहाहा ! वहाँ शरण लेने को जाओ तो वहाँ अस्ति है - ऐसा कहने में आया है। (वह) उपादेय है तथा पुण्य-पाप हेय है एवं छोड़ने लायक कहने में आया है, परंतु है उसे छोड़ने लायक कहा है, कि है ही नहीं ? यह कहते हैं, है न ?

शुभ-अशुभ का विषय संसार है। आहाहाहाहा ! तीनलोक का नाथ चैतन्यप्रभु ज्ञायक स्वरूप चैतन्यप्रकाश का पुञ्ज उसके अतिरिक्त पुण्य और पाप दो भाव होते हैं, वह संसार है, संसरणम् इति संसारः जिसमे संसरणम् (अर्थात) परिभ्रमण जिससे उत्पन्न हो उसका नाम संसार कहते हैं ***यह पुण्य-पाप के दो ही भाव संसरणम् संसार है, यह वर्तमान संसार है भविष्य में परिभ्रमण का बीज है।*** आहाहाहा ! ऐसी बात सुनते (दुःख लगे)।

उस दवाखाने में रस कितना चढ़ जाता है। देखो यह डॉक्टर है, खण्डवा खण्डवा इनके बच्चे सभी डॉक्टर हैं, मदद करते थोड़ी वहाँ जाकर, दुकान नहीं जायें परंतु ध्यान रखना कि क्या किया था, कैसा चलता है ? लगाम तो हाथ में रखना चाहिए न भले ही.....। आहाहा !

यहाँ तो कहते हैं प्रभु ! तुम जानन शक्ति के तत्त्व हो, यह राग को और पर को कैसे कर सकते हो ? आहाहा ! यह राग और पुण्य-पाप का कर्त्ता तुम मानते हो, तो यह तेरा संसार है रुलने (परिभ्रमण) की चीज (है)। आहाहा ! है ? अशुद्ध नय का विषय संसार है, यह पुण्य-पाप भाव यह संसार है और संसार में आत्मा क्लेश भोगता है। आहाहा ! (श्रोता :- बहुत से सुख भोगते हैं) धूल में सुख नहीं, सुख तो आत्मा में है, बाहर में मानते है पांच पचास लाख रुपये हुये, पुत्र हुये सात, आठ, दस। दो-दो लाख की कमाई (करने)वाले हम सुखी है, दुःख की गठरी भरी है, दुःख है क्लेश है देखो, यह शुभ-अशुभ भाव में तो वर्तमान क्लेश है, और भविष्य में क्लेश का कारण है। आहाहाहा !

`जब स्वयं परद्रव्य से भिन्न होता है' अब यहाँ धर्म की बात करते हैं यह पुण्य-पाप का शुभाशुभ भाव यह संसार है, क्लेश है, दुःख है और भविष्य में संसार परिभ्रमण का वह कारण है। आहाहाहा ! जब यह स्वयं परद्रव्य से, भिन्न होता है, इस पुण्य-पाप के भाव से मैं भिन्न हूँ, मेरी चीज तो उससे दूर भिन्न है, मैं तो ज्ञायक चैतन्यरस से भरा अतीन्द्रिय आनंद से भरा पड़ा तत्त्व हूँ, और राग जो परद्रव्य है, उससे भिन्न करते हैं (मानते हैं), वह संसार से छूटते हैं। आहाहा ! अनादिसे स्वद्रव्य से तो भिन्न हो गया है, अब परद्रव्य से भिन्न करना है। आहाहा ! स्वद्रव्य से तो भिन्न

होकर रागद्वेष को अपना मानता है, वही तो संसार है क्लेश है, दुःख है, नरक-निगोद का कारण है। आहाहा ! 'स्वयं जब परद्रव्य से भिन्न होता है तब संसार छूटता है' आहाहा !

यह शुभ कि अशुभ भाव... यह कमाना, व्यापार, ध्यान रखना संसार का स्त्री कुटुंब परिवार की सम्हाल करना वह तो पाप है, क्लेश है, और वह भविष्य में भी क्लेश और दुःख का कारण है, एवं शुभ भाव भी वर्तमान दुःख है। आहाहा ! दया, दान, व्रत, भक्ति का यह विकल्प यह भी राग है, दुःख है, वर्तमान क्लेश है, भविष्य में क्लेश का कारण है। आहाहाहा ! उससे भिन्न होकर... यह शुभ-अशुभ भाव वह तो क्लेश है, संसार है, दुःख है मेरी वस्तु में वह नहीं, ऐसे परद्रव्य से भिन्न करते हैं... आहाहाहा ! वह पुण्य-पाप का राग, यह एकत्व बुद्धि, चैतन्यभगवान के साथ राग की एकत्व बुद्धि यह परिभ्रमण का बीज है, इस एकत्व को तोड़ना और पृथक् करना... आहाहा ! भेदज्ञान करना।

पुण्य और पाप का भाव, मलिन है दुःख है, उससे अपनी चीज भिन्न है - ऐसा भिन्न करके अपना अनुभव करना, वही संसार नाश करने का उपाय है, दूसरा कोई उपाय है नहीं। आहाहाहा ! अभी तो कुछ लोग (कहते) देश सेवा करो, भूखों को अनाज दो, प्यासों को पानी दो, रोगी को दवा दो, मकान न हो उसे मकान बकान झोपड़ी दे दो, अरे भगवान कौन करे प्रभु ? परद्रव्य की क्रिया कौन करे भाई ! तुझे खबर नहीं। एक अंगुली चले तो वह तुमसे नहीं (चलती), यह परमाणु की उस समय की वह पर्याय उत्पन्न होने से वह होती है, तुमसे अंगुली हिलती नहीं, अपनी सत्ता में तुम गड़बड़ करो, कि मैं कर सकता हूँ और राग - ऐसा कर दूँ, परंतु पर की सत्ता में तुम्हारी गड़बड़ी बिलकुल नहीं चले। आहाहाहा ! अरे एक तो - ऐसा सुनता मुश्किल है, प्रथम तो सुनने को मिले नहीं, सुनना कठिन लगे, हाथ में रस्ता आये नहीं। आहाहाहा ! अनंतकाल से परिभ्रमण कर करके यह दुःखी है। आहाहा !

अभी तो सुनते हैं न ! एक अखबार में आया था गाँव विहार शरीफ है शादी होती थी पति-पत्नि की शादी के समय लड़के का हार्ट फैल हो गया। शादी के अभी तो मंत्र पढ़ रहे थे, वहाँ उस दूल्हे का हार्ट फैल हो गया। देह की स्थिति नाशवान है। आहाहाहा !

अभी नया गाम क्या नाम कहा कोड़ीनार, यह सुना न भाई कि आठ आदमी मर गये। कुयें में से ऐसी गैस निकली गैस, जैसा वह पेट्रोल निकलता है इसप्रकार पानी निकलता है, जैसे तेल निकलता है इसीप्रकार निकलता है अंदर से - ऐसा

कोई गैस निकली अंदर से, लड़के को तलासने गये उसमें मर गये, उनका पिता गया कि क्या (है) ? वह भी मर गया, उसका चाचा गया, वह मर गया, उसके चाचा का लड़का गया वह भी मर गया फिर दूसरे चार एक के बाद एक देखने गये वह भी मर गये। गैस कुयेमें से निकलती थी तो मर गये, आठ लोग मर गये। डॉक्टर ने बाद में बहुत खोज कि यह गैस (कैसी) है कुयें में। (श्रोता :- डॉक्टर बच गया) डॉक्टर ने तो बाहर रहकर उसका निर्णय किया, कि है क्या यह ? कि जो अंदर जाता है वह तुरंत मर जाता है। आहाहा !

ऐसे मृत्यु के क्षण अनंतबार जीव को आ गये हैं, यह सभी पुण्य-पाप के भाव के कर्त्ताबुद्धि के कारण हैं, आहाहाहा ! कठिन बात प्रभु ! यह तो निवृत्ति स्वरूप प्रभु है। परद्रव्य से तो निवृत्ति स्वरूप है ही, परद्रव्य तो उसमें है ही नहीं, इससे यह तो निवृत्त है ही, परंतु पुण्य-पाप के भाव से भी निवृत्त है। आहाहाहा ! अब यह निवृत्ति लेने आये नहीं तो उसका संसार मिटे नहीं। आहाहा ! समझ में आया। आहाहा ! जिनेश्वर तीनलोक के नाथ परमेश्वर - ऐसा फरमाते हैं उनकी यह वाणी है। आहा ! `स्वयं परद्रव्य से भिन्न होता है तब संसार छूटता हैं और क्लेश दूर होता है' शुभ अशुभ भाव वह क्लेश है, संसार है, दुःख है, उससे भिन्न होकर अपना चैतन्य आनंदस्वरूप भगवान त्रिकाली मौजूदगी चीज है, कायमी चीज है, उसकी शरण लेने से संसार छूट जाता है। आहाहा !

`इसप्रकार दुःख मिटाने के लिये शुद्धनय का उपदेश प्रधान है,' क्या कहते हैं ? कि शुद्धनय का विषय को त्रिकाली आनंद है वही कहा, और पुण्य-पाप को असत्य कहा, उस शुद्धनय के विषय को आदर करने को मुख्यरूप से शुद्धनय का विषय ध्रुव है, उसका आदर करने को यही वस्तु सत्य है - ऐसा कहा और पुण्य-पाप को अशुद्ध (कहा) है, यह स्वभाव की अपेक्षा से असत है स्वभाव में नहीं है, इस अपेक्षा से उसमें नहीं है - ऐसा कहा। समझ में आया ? आहाहा ! शुद्धनय का उपदेश मुख्य है, प्रधान अर्थात मुख्य क्या ? त्रिकाली ज्ञायक भाव है उसकी शरण ले, उसके समीप में जाओ, उससे दूर (रहने से) दूर भटकते हो, चैतन्यभगवान आनंद का नाथ मौजूद चीज ध्रुव... आहाहा ! वह तेरह बोल है न यहाँ गुजराती (आत्मधर्म) में आये हैं, ध्रुव धाम के ध्यान का ध्येय... अभी पत्रिका आई थी, किसको दी थी, किसी को अभी। कल कौन था उसे दी थी, हिम्मत को दी थी, हिम्मत नहीं ? है। कल पत्रिका किसे दी थी, हाँ उसे दी थी, हाँ उसे दी थी, तब ठीक योगेश था उसे दी थी, तेरह बोल नहीं ? अपनी गुजराती में डाला है। वहाँ पिछले वर्ष बनाये थे न वहाँ भावनगर में, तब तेरह बोल बनाये थे।

`ध्रुव धाम के ध्येय की ध्यान में धीरज से धगश की धुनी धगश लगाओ, तेरहबोल है - ऐसा कुछ अपनी गुजराती में आ गया, आत्मधर्म में। आहाहाहा ! उसका धरनेवाला एक-दो शब्द कम रह गये हैं, है ? आहाहा ! यह मिला था तुमको ? नहीं मिला ? फिर देंगे। ध्रुव धाम के ध्येय का ध्यान की धधकती, धूणी धगश से धीरज से धरबाना उस धर्म का धारक धर्मी धन्य है। सभी ध-ध है। किसके पास से आया ? तुम्हारे पास से ? यह ध्रुवधाम, अपना ध्रुव स्थान नित्यानंद प्रभु, पुण्य-पाप की पर्याय से भिन्न (है), यह ध्रुवधाम का ध्येय उसे ध्येय बनाकर ध्यान (अर्थात) उसकी एकाग्रता करके, धधकती धुनी... पर्याय में एकाग्रता की धधकती धुनी, (गुजराती है) धगश और धीरज से धगश अर्थात उग्र पुरुषार्थ और धीरज से धधकाना अंदर एकाकार करना स्वरूप में एकाकार वह धर्म का धारक धर्मी धन्य है। तेरह है तेरह। बाद में देंगे डॉक्टर को। आहाहा ! चार बोल है यह दिये थे ? ऐसे चार बोल हैं। जानते हो भिन्न-भिन्न। यह एक पत्र ऐसे चार पन्ने हैं, भिन्न-भिन्न जाति के फिर देंगे डॉक्टर को। आहाहा ! फिर देंगे डॉक्टर को आहा ! यहाँ तो हमारे पास हो वह आये। आहाहा !

यहाँ कहते हैं, कि शुद्धनय का विषय प्रधान करके मुख्य करके कहा है त्रिकाली आनंद के नाथ प्रभु हैं न, आहाहा ! उसकी शरण ले तुम्हारी शरण वहाँ है, तुम्हारा धाम वहाँ है, तुम्हारा स्थान वहां है, तुम्हारी शक्ति वहां है, तुम्हारा गुण वहाँ है, अरेरे ! - ऐसा कहाँ सुनना। आहाहा ! अरेरे मनुष्यपना मिला, परंतु यों का यों पचास-साठ वर्ष बितायें... पाप में ही पाप में जगत में रहे, इसे कहाँ जाना (है) भाई ? आहाहाहा ! यहाँ तो पुण्य में थोड़ा समय लगाये कदाचित, तो यह भी बंध का कारण क्लेश है। आहाहा ! उसकी दृष्टि छोड़ना और उसको त्रिकाली की दृष्टि कराने को, शुद्धनय को प्रधान कहकर मुख्य करके यह है - ऐसा कहा है, त्रिकाली चीज चिदानंदप्रभु भगवान - ऐसा कहते हैं प्रभु तेरा स्वरूप पूर्ण है वहाँ जाओ ! यह मलिन पर्याय है उसमें से हट जा ! तुमको जो मुक्ति चाहिए हो और आनंद लेना हो तो। अन्यथा तो दुःख तो होता है अनादि से। आहाहा ! है ?

`अशुद्धनय को असत्यार्थ कहने से' अशुद्धनय अर्थात पुण्य-पाप का (भाव) वह नय नहीं है - ऐसा कहा। असत्यार्थ कहा, अभूतार्थ कहा, झूठा कहा। तब `यह न समझना चाहिए, कि आकाश के फूल की भांति वस्तु धर्म सर्वथा नहीं,' आकाश में फूल नहीं, आकाश में फूल होता है ? इसीप्रकार पुण्य-पाप का और अशुभ परिणाम है ही नहीं - ऐसा नहीं है, तुम्हारी पर्याय में है, आहाहा ! है तो स्वरूप की दृष्टि करने से यह छूट जाता है, दुःख है, दुःख है ! आहाहा ! आंख मिची तो समाप्त हो गया। यह पैसा तथा शरीर एवं रजकण जहाँ जहाँ जो रहते हैं वहाँ रहेगा,

तुम्हारे कारण से कोई पर में फेरफार होता (नहीं) है ? आहाहा ! जहाँ जहाँ पुद्गल परमाणु जैसी पर्याय में है वहाँ वह रहेगा, उसको बदलने में तुम्हारे आत्मा की कोई शक्ति नहीं। तुम्हारी शक्ति है ही नहीं। आहाहा ! कल्पना चाहे जो तुम करो, परंतु जो चीज जहाँ जिस पर्याय से जहाँ जैसी है वहाँ, रहेगी। आहाहाहा ! - ऐसा कठिन (मार्ग) है। जो पर्याय जहाँ जिस क्षेत्र में, जिस काल भाव में जहाँ जहाँ है वहाँ वहाँ होगी, तुम्हारी कल्पना से उसमें फेरफार हो... काल बदल जाय और परिस्थिति बदल जाय - ऐसा कुछ है नहीं वहाँ, तुम बदल जाओ। तुम्हारी दृष्टि जो पुण्य-पाप और अशुद्धता ऊपर है उसको छोड़ दो तुम बस ! यह तुम्हारे अधिकार की बात है। ऐसी बात भाई बहुत... आहाहा !

`आकाश फूल की भांति यह वस्तु धर्म सर्वथा ही नहीं' आत्मा की पर्याय में मलिनता है ही नहीं, यह तो आकाश फूल है। ऐसा नहीं है - ऐसा माने तो मिथ्यात्व होगा। आहाहा ! है ? - ऐसा सर्वथा एकांत समझने से मिथ्यात्व होता है। पर्याय में मलिनता अशुद्धता नहीं है - ऐसा मानना मिथ्यात्व है।

और अशुद्धता से धर्म होगा, ऐसी मान्यता भी मिथ्यात्व है। और मेरे शुद्धस्वभाव में अशुद्धता घुस गई है - ऐसा मानना भी मिथ्यात्व है। आहाहा ! - ऐसा उपदेश और सुननेवाले (सामान्य) मनुष्य...

परंतु अब तो जिज्ञासु लोग सुनते हैं। घाटकोपर जन्म जयंती हुई, पंद्रह हजार, बीस हजार मनुष्य (आते), बात तो यह है हमारी। आहा ! बापू प्रभु तुम कौन हो ? कहाँ हो ? और हो तो तुम्हारी पर्याय में भी तुम हो, परंतु पर्याय में मलिनता है यह छोड़ने को असत्यार्थ कह कर त्रिकाली की सत्यार्थ की शरण लेना है। आहाहाहा ! इसलिये स्याद्वाद की शरण लेकर... अपेक्षा से कहा था। त्रिकालीशुद्ध में त्रिकाली द्रव्य में, मलिनता है ही नहीं, तो पर्याय में नहीं है - ऐसा नहीं कहना था। अपेक्षा से कहा वस्तु में नहीं। आहाहा ! स्याद्वाद नाम अपेक्षा, स्याद, अर्थात अपेक्षा, वाद अर्थात कहना अथवा जानना। `अपेक्षा की शरण लेकर जानने से शुद्धनय का अवलम्बन लेना चाहिए'। पुण्य-पाप मलिनता पर्याय में है - ऐसा जानकर, उसकी दृष्टि छोड़कर त्रिकाली की शरण लेना। आहाहा !

इसमें कहीं दया पालना व्रत पालना, पैसा देना वहाँ मंदिर बनवाना कि पांच करोड़रुपया है वह एक करोड़ धर्म के नाम पर दे। अरे पांच करोड़ दे दे तो यह तो जड़ है उसमें तुम्हें धर्म कहाँ है। आहाहा ! (श्रोता :- अब मंदिर बन गया) अब मंदिर बन गया अतः आपत्ती नहीं - ऐसा कहते हैं, मंदिर नहीं बना था तब भी हम तो पहले से यही कहते आये है यहाँ तो, हाँ ? आहाहा ! बेंगलोर में बारह

लाख का मंदिर। अभी गये थे बेंगलोर - ऐसा मंदिर बना है वहाँ तो हम थे पंचकल्याण किया था न ? आठ लाख तो एक भभूतमलजी ने दिया श्वेताम्बर भभूतमल, दो करोड़ का आसामी है श्वेताम्बर, उन्होंने आठ लाख दिया और एक करोड़पति अपना है जुगराजजी बोम्बे में महावीर मार्केट, स्थानकवासी करोड़पति, उसने चारलाख रुपया दिया, बारह लाख का मंदिर बना परंतु देखना, और उसमें अभी हम पहले पंचकल्याण के समय बारह लाख, अभी विचारो तो पंद्रहलाख परंतु मंदिर, मंदिर ओहो !

- ऐसा दिगम्बर मंदिर - ऐसा दिखे कि... कलकत्तावाला (डॉक्टर) आयेगा अभी आनेवाला है न गांगुली आठ तारीख को आनेवाला है। क्या कहते हैं तुम्हारी भाषा में ? होम्योपेथी का बड़ा डॉक्टर, होम्योपेथी में अपने यहाँ आते है, वेदांती (है) तीन बार यहाँ आये, बेंगलोर आ चुके, वहाँ आ चुके, घाटकोपर भी आ चुके फिर उनको रस लगा सुनने का... ओ भाई यह वस्तु तो राग का विकल्प करना, कारण कि ब्रह्मचारी है। ४९ वर्ष की उम्र है ब्रह्मचारी है, सुन्दर राजकुमार जैसा शरीर है, और बहुत पैसा पैदा होता है, बारह महीने बहुत पैसा आता है, और भगवान के नाम पर दान देते हैं। दुःखी कोई हो उसे पैसा देते (है) और (बोले) अब आजीवन ब्रह्मचर्य से रहना है। महाराज ! इस आठवीं तारीख को आनेवाले है।

उन्होंने देखा मंदिर भाई, चंदुभाई ! अन्यथा आये थे तो सुनने और स्वास्थ्य देखने, मंदिर देखा... ओहोहो ! बेंगलोर में एक हजार रुपया मैं देता हूँ। डॉक्टर स्वयं (श्रोता :- मंदिर का इतना प्रभाव पड़ा) इसे - ऐसा लगा कि, ओहो यह चीज ऐसी ? भले ही धर्म दूसरा, परंतु यह एक मंदिर - ऐसा बनाया नीचे भोंयरा, मंदिर, ऊपर समवशरण - ऐसा पन्द्रहलाख का मंदिर बेंगलोर में, बहुत खुश हो गया।

अभी इस १७वीं तारीख को अफ्रीका के नैरोबी में पन्द्रह लाख के मंदिर का शिलान्यास हो गया, भाई लालचन्द्रभाई ! यह यह बाबूभाई, अपने लालचन्द्रभाई वहाँ गये थे, और १७वीं तारीख को वहाँ, लोग करोड़पति है चार श्वेताम्बर, दूसरे पन्द्रह बीस-बीस लाखवाले बहुत हैं, मंदिर हो गया सभी, ४० घर उन्होंने पन्द्रहलाख का मंदिर बनाया। शिलान्यास किया अभी, यह तो ग्रहस्थ लोग है, यह तो चाहे जो करें परंतु वह तो पर की चीज है बापू ! यह तो बनने के काल में बनेगी दूसरा जीव कहे हमसे बनती है... आहाहा ! (श्रोता :- कारीगर से बनता है।) कारीगर से बनता नहीं, कारीगर दूसरा द्रव्य है यह द्रव्य दूसरा है (उसका) जन्मक्षण है। १०२ गाथा प्रवचनसार।

प्रत्येक द्रव्य की जिस समय जो पर्याय उत्पन्न होने का जन्म नाम उत्पत्ती काल है, तब यह उत्पन्न होती है, पर से बिलकुल तीनकाल तीनलोक में नहीं। आहाहाहा !

यह हाथ हिलता है उस समय का जन्मक्षण है - पर्याय की ऐसी उत्पत्ती का काल है, तो उत्पन्न होती है, आत्मा से बिलकुल नहीं। अरे ! ऐसी बात सुनने मिले नहीं। कठिनबात है बापू परंतु इसका फल कैसा है ? शुद्धनय का आश्रय, चिदानंद का आश्रय करने पर जिसके फल में अतीन्द्रिय आनंद और पूर्णता में अतीन्द्रिय आनंद उसका फल। आहाहाहा !

`इसलिए स्याद्वाद की शरणलेकर' (किसी) अपेक्षा से ***त्रिकाली शुद्ध में अशुद्धता नहीं, पर्याय में अशुद्धता है - ऐसे दोनों प्रकार का ज्ञान करके अशुद्धता की शरण छोड़ दे और त्रिकाली शुद्ध की शरण ले, परंतु अशुद्धता का ज्ञान रख कर।*** आहाहा ! यह चौदहवीं गाथा में आया है तथा टीका में भावार्थ में कि भाई यहाँ अस्वीकार मत करो, परंतु अशुद्धता है, पर्याय है, यह लक्ष्य में रखकर फिर यह बात है, पर्याय नहीं हो तो एकांत वेदांत हो जाता है। वेदांतों ने पर्याय मानी ही नहीं। पर्याय न माने तो अनुभव किसका ? त्रिकाली का अनुभव किसने किया ? द्रव्य ने किया कि पर्याय ने किया ? यह त्रिकाली आत्मा है यह निर्णय किसने किया ? यदि पर्याय न हो तो पर्याय बिना निर्णय करे कौन ? नित्य का निर्णय अनित्य करती है। द्रव्य नित्य है, उसकी पर्याय अनित्य है यह उसका निर्णय करती है, आहाहाहाहा !

परंतु उस पर्याय की दृष्टि छोड़ने को त्रिकाली वस्तु जो सत्य है और अशुद्धता यह असत्य है। इसप्रकार मुख्य गौण करके कहने में आया है। आहाहा ! बिलकुल अशुद्धता है ही नहीं तो फिर अशुद्धता टालने का उपाय भी निरर्थक हो जाता है। और धर्म करना है, यदि अधर्म न हो, पर्याय में अधर्म न हो तब धर्म करना... वह रहता नहीं। आहाहाहाहा ! अधर्म की पर्याय के स्थान में धर्म लाना है, तब त्रिकाणी स्वभाव शुद्ध न हो तब आश्रय बिना धर्म होता नहीं और अशुद्धता न हो तो (अशुद्धता का व्यय) हुये बिना शुद्धता प्रगट होती नहीं, ऐसी बात है, इसलिये स्याद्वाद की शरण लेकर शुद्धनय का अवलम्बन लेना चाहिए, शुद्धनय अर्थात त्रिकाली वस्तु।

`स्वरूप की प्राप्ति होने के बाद'** चैतन्यमूर्ति पूर्ण शुद्ध जब दृष्टिमें-अनुभवमें आया और आने से पूर्ण प्राप्ति करके ***सर्वज्ञ हुआ केवली हुआ केवलज्ञानी हुआ। `शुद्धनय का भी अवलम्बन नहीं रहता' बाद में स्वतरफ झुकना यह रहता नहीं, अवलम्बन अर्थात पूर्ण हो गया। आहाहाहा !*

जो वस्तु स्वरूप है वह है, वहाँ तो जैसा द्रव्य है न वैसी पर्याय है - ऐसा है। - ऐसा ज्ञान हो गया, इसका फल वीतरागता है, प्रमाण का फल। इस प्रकार निश्चय करना योग्य है देखो ! ओहोहो ! सरलभाषा में कितना भरा है, चलती भाषा टीका के अलावा, **`यहाँ ज्ञायक भाव प्रमत्त-अप्रमत्त नहीं - ऐसा कहा,'** क्या कहते

हैं ? कि वस्तु जो ध्रुव चैतन्य प्रभु जो सम्यग्दर्शन का विषय है वह तो प्रमत्त-अप्रमत्त १४ गुणस्थान उसमें नहीं, पर्याय का भेद उसमें नहीं - ऐसा कहा, `**यह गुणस्थानों की परिपाटी में छह गुणस्थान तक प्रमत्त और सातवें से लेकर अप्रमत्त कहलाता है किन्तु यह सभी गुणस्थान अशुद्धनय की कथनी में है**' आहाहा ! पहला गुणस्थान, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवां, छठवां, सातवां, आठवां, तेरहवां यह व्यवहारनय की कथनी में है। आहाहा ! है ? अशुद्धनय की कथनी में है।

`**शुद्धनय से तो आत्मा ज्ञायक है**' अकेला चैतन्यबिम्ब प्रकाश का प्रवाह जाननेवाला ज्ञायकस्वरूप है, जाननेवाला ज्ञायक स्वरूप है, उसमें वह भेद-वेद-गुणस्थानों के है नहीं। आहाहाहा !

`**अब प्रश्न यह होता है,**' अब सातवीं (गाथा की) भूमिका बताते है `**अब प्रश्न यह होता है कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र को आत्मा का धर्म कहा गया है**' भले रागादिक नहीं पुण्यादि भी नहीं, परन्तु आत्मा जो वस्तु है उसका भान हुआ अनुभव, तब सम्यग्दर्शन-ज्ञान, चारित्र तो आत्मा का धर्म है किन्तु यह तो तीन भेद हुये... सूक्ष्मबात है। ज्ञायक भाव जो त्रिकाल वस्तु है उसमें जो दर्शन-ज्ञान-चारित्र जो सम्यग्दर्शन ज्ञान प्रगट होता है, सम्यग्दर्शन अंतर के आश्रय से ज्ञान और चारित्र तब तीन भेद हो गये... है न ? यह भेद हुआ तथा भेदभाव से आत्मा में अशुद्धता आती है... और भेद भाव का लक्ष्य करने सो तो विकल्प उठते हैं। आहाहा ! समझ में आया ?

पुण्य-पाप तो विकल्प है दुःख है ही, परंतु आत्मा त्रिकाली जो ज्ञायक भाव है शुद्ध चैतन्य ध्रुव, उसकी दृष्टि ज्ञान और रमणता तीन बोल प्रगट हुये, मोक्ष का मार्ग वह तो तीन हुआ, तीन हुआ वह भेद हुआ, तो भेद से तो विकल्प उत्पन्न होता है अशुद्धता आती है शिष्य का प्रश्न है। आहाहा ! है ? भेदरूप भावों से तो आत्मा को अशुद्धता आती है उसके उत्तर स्वरूप गाथा सूत्र कहते हैं, क्या कहते हैं ? यह कि जिसके हृदय में - ऐसा प्रश्न उठा कि आपने पुण्य पाप की अशुद्धता को दूर करा दिया... वस्तु में है नहीं, वह तो ठीक, परंतु वस्तु में जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र हुआ वह तीन भेद है, तब तीन भेद से तो अशुद्धता आती है, इसमें एकरूपता ज्ञायकता रहती नहीं। - ऐसा जिसको अंतर में हृदय में धगश (से) प्रश्न उठा है, उसको उत्तर देने में आता है, सामान्य श्रोताओं को नहीं। ठीक अपन सुनने को आये हैं न ! अपने को सुनना हैं - ऐसा नहीं। जिसके अंतरंग में... आहाहा ! शुभ-अशुभ भाव तो मलिन है, अशुद्ध है वह तो ठीक, परंतु एक वस्तु में उसकी दृष्टि ज्ञान और रमणता प्रगट हुये तीन, तब तीन हुये तो वह भी अशुद्धता आई। एक का आश्रय लेकर जो शुद्धता हो उस शुद्धता का तीन भेद (करके) लक्ष्य करने से

तो अशुद्धता आती है। आहाहा ! तब यह अशुद्धता... (तीन) भावों से अशुद्धता आती है, तब इसका क्या अर्थ ? ऐसी धगश जिसको है उसको उत्तर देने में आता है कि यह अशुद्धता भी मलिन है, तीन भेद ऊपर लक्ष्य करना नहीं, अनंत (गुणवाला) ज्ञायकस्वरूप है उसपर दृष्टि करना। इन भेद ऊपर लक्ष्य करने से तुम्हें विकल्प और राग उत्पन्न होगा। - ऐसा उत्तर आयेगा। (प्रमाण वचन गुरुदेव !)